''मैं हूं'' कथन पृथ्वी पर पुत्र की ईश्वरीयता की झलक देते हैं

उस समय के ऐतिहासिक और धार्मिक वातावरण के विपरीत यीशु के जीवन व दावों के कई पहलू अच्छी तरह समझ आते हैं। परन्तु यीशु के विश्वव्यापी महत्व और उसके उद्देश्य को स्थान, समय, संस्कृति, धार्मिक विचारों या इतिहास के सामान्य नियमों से सीमित करना या मापना सम्भव नहीं है। वह इन क्षेत्रों को ऊपर उठाकर इन्हें सही उत्तर देता है। वह इनसे ऊपर है क्योंकि वह परमेश्वर पुत्र है। उसने परमेश्वर-मनुष्य बनकर उनके बीच रहकर इन्हें अर्थ दिया। उसका परमेश्वर होना और उसकी मनुष्यता हमारे अपने अस्तित्व के लिए बहुत आवश्यक है। *उसके परमेश्वर होने के बिना हमारी रचना न होती; न ही उसके मनुष्य बने बिना हमारा उद्धार हो सकता था।*

फिर तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है कि यीशु ने स्पष्ट समझाया कि वह परमेश्वर है। न ही यह आश्चर्य की बात है कि नये नियम के लेखकों ने उसके परमेश्वर होने पर ज़ोर दिया है। उसके जीवन और शिक्षा के आधार के रूप में इस सच्चाई के बिना, यीशु किसी महान दार्शनिक, नीति उपदेशक या शिक्षक से अधिक न होता और पाप तथा मृत्यु के बंधनों से हमारे बचाव की आशा व्यर्थ और निराधार होती। आइए इस प्रश्न के हर पहलू पर विचार करें कि या तो यीशु परमेश्वर था, या वह एक क्रूर धोखेबाज। इस प्रश्न के विषय में संक्षेप में *उसका* क्या कहना है ?

उसकी ईश्वरीयता की पुष्टि

यीशु को उन बहुत से लोगों द्वारा ''परमेश्वर का पुत्र'' कहा जाता था जो ज़रूरी नहीं कि उसे ईश्वर मानते ही हों। हम देख चुके हैं कि ''मसायाह'' शब्द अपने आप में परमेश्वर का संकेत नहीं देता था। हमने देखा है कि उसके आश्चर्यकर्मों से हमेशा उसमें एक ईश्वरीय व्यक्ति के रूप में विश्वास उत्पन्न नहीं हुआ। हमने यह भी देखा है कि उसके द्वारा आपको बार-बार ''मनुष्य का पुत्र'' कहने को भी अधिकतर लोगों द्वारा *उसकी ईश्वरीयता की पुष्टि के ढंग के रूप में* उचित रूप से नहीं समझा गया था। परन्तु हमने *परमेश्वर होने के* यीशु के

विशिष्ट दावों की जांच-परख *नहीं* की है। परन्तु अब करेंगे।

यीशु एक यहूदी था। उसकी महत्ता, पढ़ाई, जीवन और गतिविधियों के कारण यहूदी सभा के रब्बी निकुदेमुस ने यीशु को ''हे रब्बी, हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु हो कर आया है'' (यूहन्ना 3:2क) कहकर सम्बोधित किया था। यीशु तोराह को जानता था; और तोराह पढ़ाने वाले इस बात से अवगत थे कि उसे पवित्र लेखों का अच्छा ज्ञान है। इसलिए, जब यीशु ने अपनी ईश्वरीयता की गवाही के रूप में पवित्र शास्त्रों का प्रयोग किया, तो वे उसकी बात को समझ गए। वे भौंचक्के और क्रोधित हो गए थे क्योंकि उन्हें पता था कि वह ऐसी बातें करने में गम्भीर था। उन्हें मालूम था कि वह परमेश्वर होने का दावा कर रहा है।

यहूदी लोग मूसा को प्रकट किए गए परमेश्वर के नाम[1] में इतनी भक्ति से रखते थे कि वे अपने मुंह से इसका नाम नहीं लेते थे। इसके लिए शास्त्र का प्रमाण लगभग 100 ई. पू. मृत सागर में मिली पत्रियों तक जाता है। मृत सागर में मिली यशायाह की पत्री दिखाती है कि ग्रंथियों ने *याहवेह* (परमेश्वर) शब्द पर *अदोनाय* (प्रभु) शब्द लिखा था।[2] इस प्रकार पढ़ने वालों को अकथनीय नाम के बजाय ''प्रभु'' कहने के लिए स्मरण कराया जाता था। निश्चय ही, मूसा के लिए प्रकट किया गया परमेश्वर का नाम *याहवेह* था, जो कि ''होना'' क्रिया का एक रूप है। अन्य शब्दों में, परमेश्वर ने अपने आपको मूसा पर ''मैं हूं'' या ''मैं हूंगा'' (जो मैं हूंगा) अर्थात जो है, के रूप में प्रकट किया था।

यीशु द्वारा अपने लिए ये शब्द प्रयुक्त करने के समय यहूदियों में भड़के क्रोध और आतंक को समझना हमारे लिए मुश्किल है: ''यीशु ने उन से कहा; *मैं तुम से सच कहता हूं; कि पहिले इसके कि इब्राहीम उत्पन्न हुआ मैं हूं।* तब उन्होंने उसे मारने के लिए पत्थर उठाए, ...'' (यूहन्ना 8:58, 59क)। यह सबसे बड़ी घोषणा थी। इससे बड़ा दावा नहीं किया जा सकता था।

Ego eimi (अर्थात ''मैं हूं'') केवल परमेश्वर के लिए ही नहीं है, जैसा कि यूनानी नये नियम में लगता है, बल्कि इब्रानी भाषा में *'ani 'ani hu* (अर्थात ''मैं वही हूं'') ज़ोर देकर कहने के ढंग में अपने बारे में परमेश्वर के बात करने का एक अनुवाद है (व्यवस्थाविवरण 32:39)। इस वाक्य को तर्कसंगत रूप से ज़ोर देकर कहने से अधिक नहीं माना जा सकता था। हिन्दी अनुवाद ''मैं तुम से सच कहता हूं'' मूल भाषा में ''आमीन, आमीन'' है जिसे अंग्रेज़ी के परम्परागत अनुवादों में ''verily, verily'' (KJV), ''truly, truly'' (RSV) आदि के रूप में अनुवादित किया गया है।[3]

परन्तु यहूदियों ने उस पर विश्वास नहीं किया था। उन्होंने उसके दावे को परमेश्वर की निन्दा समझा था। क्योंकि परमेश्वर की निन्दा पत्थर मार मारकर मृत्यु दण्ड देने के योग्य अपराध था (लैव्यव्यवस्था 24:16), इसलिए उन्होंने भीड़ के द्वारा वह काम करना चाहा जिसकी रोमी कानून के अनुसार करने की अनुमति उन्हें नहीं थी (यूहन्ना 18:31)।

सब बातों पर विचार किया गया, ''मैं हूं'' के बारे में उपयुक्त शब्द कहने के लिए यह फार्मूला सही लगता है: ''अपने बारे में यीशु का यह सबसे स्पष्ट ऐलान है कि 'मैं हूं।' इसका

अर्थ है: *जहां मैं हूं, वहां परमेश्वर है, वहां परमेश्वर रहता है, बात करता है, बुलाता है, पूछता है, काम करता है, निर्णय लेता है, प्रेम करता है।*... इससे अधिक स्पष्ट बात कहना या कल्पना करना सम्भव नहीं है।''[4]

यह गहरे अर्थ वाला वाक्य है मात्र एक अंगीकार ही नहीं है। यह उससे कहीं बढ़कर है। यह एक विस्मित करने वाला *ऐलान* है। यह स्वयं परमेश्वर की भाषा है (उदाहरण के लिए देखिए यशायाह 41:4)। इसी को ध्यान में रखने से यीशु के जीवन के बहुत से कथनों का विशेष महत्व हो जाता है। उदाहरण के लिए ध्यान दें: ''जीवन की रोटी *मैं हूं,*'' ''जगत की ज्योति *मैं हूं,*'' ''भेड़ों का द्वार *मैं हूं,*'' ''अच्छा चरवाहा *मैं हूं,*'' ''पुनरुत्थान और जीवन *मैं हूं,*'' ''मार्ग *मैं हूं,*'' ''सच्चाई *मैं हूं,*'' ''सच्ची दाखलता *मैं हूं*'' (यूहन्ना 6:35; 8:12; 10:7, 11; 11:25; 14:6; 15:1)। अपने बारे में ऐसी बातें कोई कैसे कह सकता है? किसी ने कहा है कि यीशु या तो पागल था, या बावला या फिर परमेश्वर। कोई भी जो इन वृत्तांतों को पढ़कर *इन पर विश्वास करता है,* और फिर ज़ोर देता है कि यीशु कोई पागल या बावला था, यीशु के बारे में कम और अपने बारे में अधिक कहता है।

उसके परमेश्वर होने की पुष्टि

यीशु के जीवन की एक घटना दूसरे लोगों को असामान्य ढंग से काम करते दिखाती है जिसमें उसने कहा ''मैं हूं।'' उसे पकड़वाने वाला यहूदा, सिपाहियों के दल और यहूदी धार्मिक अगुओं को लेकर यीशु की खोज में गतसमनी के बाग में चला गया था। वह उन्हें वहां अपने चेलों के साथ मिला था। यीशु ने उनसे पूछा कि वे किसे ढूंढ़ रहे हैं (यूहन्ना 18:4)। जब उन्होंने कहा, ''यीशु नासरी को'' तो उसने उत्तर दिया, *"Ego eimi"* (''मैं हूं'' जिसका अधिकतर संस्करणों में अनुवाद ''वह मैं ही हूं'' किया गया है)। क्या सिपाहियों के इस सशस्त्र दल और धार्मिक प्रतिष्ठित लोगों को समझ आ गई थी कि वास्तव में वह गलील का घुमक्कड़ रब्बी था? यदि उन्हें यह समझ आ गई थी, *तो वे पीछे हटकर भूमि पर क्यों गिर पड़े थे* (यूहन्ना 18:2-8)। क्या उन्होंने तुच्छ से इलाके से आई इस परम्परा के विरुद्ध रब्बी में जिसे यरूशलेम के स्थापित धार्मिक लोगों में ठट्ठा किया गया और ठुकराया गया था कुछ भयंकर और अशुभ बात देखी थी? लगता नहीं है! जो उन्होंने देखा वह एक प्रभावशाली व्यक्ति था वह ईश्वरीय भाषा थी-''*Ego eimi.*'' उसने दो बार यह कहा था! अंग्रेज़ी बाइबलों में सर्वनाम ''He'' अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया था। यूनानी शास्त्र में यह नहीं है। जिन बाइबलों में शास्त्र में जोड़े शब्दों का संकेत देने के लिए उन्हें इटेलिक किया जाता है उनमें यह स्पष्ट हो जाएगा। हिन्दी बाइबल में ''वह'' का न होना मूल में इसकी अनुपस्थिति का संकेत है।

इससे पहले के अवसरों में यीशु ने यहूदी श्रोताओं को अपने स्वर्गीय पिता के साथ अपने विलक्षण सम्बन्ध को समझाया था। उसने ज़ोर दिया था कि वह ऊपर से है जबकि वे नीचे थे। उसने कहा था कि वे अपने पापों के कारण वहां नहीं जा सकते थे जहां वह था। परन्तु उसने यह कहकर कि ''यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वहीं हूं, तो अपने पापों में

मरोगे'' उनके सामने समाधान रखा था।[5] यीशु ने उनके सामने इस बात के हर पहलू को रखा था। ''मैं हूं'' प्रश्न का अब केवल थियोलोजिकल पहलू ही दिलचस्प नहीं था।

न ही यह आज हो सकता है। यीशु ''मैं हूं'' है। उसका पिता ''मैं हूं'' है। यह भाषा ईश्वरीय है। परमेश्वर से कम यीशु का किसी भी तरह का अंगीकार उस तक और उसके स्वर्गीय घर तक पहुंचने के द्वार को बन्द कर देता है।

परमेश्वर के रूप में यीशु ने अपना परिचय मसायाह के रूप में करवाया था। परमेश्वर के रूप में यीशु ने अपना परिचय यहूदियों के राजा के रूप में भी करवाया था। परमेश्वर के रूप में, यीशु ने अपना परिचय मनुष्य के पुत्र के रूप में भी करवाया था। परमेश्वर के रूप में यीशु संसार में पापियों के ढूंढ़ने और बचाने के लिए आया था। यीशु, सचमुच, परमेश्वर पुत्र था।

ये सभी पहचान चिह्न उस समय दिए गए थे जब वह देह के पर्दे में था। ये सभी परमेश्वर की बुद्धि, सामर्थ, महिमा, प्रेम और अनुग्रह का प्रदर्शन करते थे। *ये सभी पहचान चिह्न उसके पुनरुत्थान से प्रमाणित और प्रामाणिक हुए थे!* इस देह के पर्दे ने प्रेमी और अनुग्रहकारी परमेश्वर को छुपाया भी था और प्रकट भी किया था। इसके बाद यीशु के मनुष्य होने का अध्ययन करने के समय हम देह के पर्दे की जांच करेंगे।

पाद टिप्पणियां

[1]निर्गमन 3:13–15; 6:2, 3. [2]मिलर बरोस, सं., द डैड सी स्क्रोलस ऑफ़ सेंट मार्क'स मोनास्टरी, vol. 1 ''द आयज़या मैनसक्रिप्ट एण्ड द हैबेकुक कमैन्ट्री'' (न्यू हैवन: द अमेरिकन स्कूल ऑफ़ ओरियन्टल रिसर्च, 1950), प्लेट बाई, लाइन 20; यशायाह 28:16; आदि। [3]NIV, RSV, KJV, NEB और JB में यूहन्ना 8:58 देखिए। ''सुसमाचारों में [*आमीन, आमीन*] का इस्तेमाल केवल यीशु द्वारा किया गया है, और वह भी महत्वपूर्ण कथनों के उपसर्ग के रूप में। सम्भवत: यह उन्हें गंभीर और सत्य और महत्वपूर्ण दिखाने के लिए है। किसी के अपने शब्दों को दिखाने के लिए आमीन का यह इस्तेमाल यीशु का अपना लगता है, इसके समानांतर किसी यहूदी कथन का उल्लेख नहीं है'' (लियोन मोरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू जॉन,* द न्यू इंटरनेशनल कमैन्ट्री ऑन द न्यू टैस्टामेन्ट, सं. एफ. एफ. ब्रूस [ग्रैंड रेपिड्स मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1971], 169)। [4]ई. स्टाफर, *जीज़स एण्ड हिज़ स्टोरी* (लंडन: पृ. न., 1960), जैसा मौरिस, 159 में उद्धृत किया गया। [5]यूहन्ना 8:21–34; न्यू अमेरिकन बाइबल। तु. यूहन्ना 8:27, 28 भी; न्यू अमेरिकन बाइबल और NASB.